



# भारत का राजपत्र The Gazette of India

असाधारण

EXTRAORDINARY

भाग II—खण्ड 3—उप-खण्ड (ii)

PART II—Section 3—Sub-section (ii)

प्राधिकार से प्रकाशित

PUBLISHED BY AUTHORITY

सं. 2299]

नई दिल्ली, शुक्रवार, जून 22, 2018/आषाढ़ 1, 1940

No. 2299]

NEW DELHI, FRIDAY, JUNE 22, 2018/ASHADHA 1, 1940

वित्त मंत्रालय

(राजस्व विभाग)

(केन्द्रीय प्रत्यक्ष कर बोर्ड)

अधिसूचना

नई दिल्ली, 22 जून, 2018

(आय-कर)

**का.आ. 3039 (अ).**—केंद्रीय सरकार, आय-कर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) (जिसे इसमें इसके पश्चात् अधिनियम कहा गया है) की धारा 115जज की उपधारा (1) द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए, अधिसूचित करती है कि,—

अ. ऐसी दशा में, जहां कोई विदेशी कंपनी किसी पूर्व वर्ष में अधिनियम की धारा 6 की उपधारा (3) के अधीन भारत में प्रभावी प्रबंध स्थान (जिसे इसमें इसके पश्चात् प्रभावी प्रबंध स्थान कहा गया है) के कारण भारत में निवासी होना कथित है और ऐसी विदेशी कंपनी उक्त पूर्व वर्ष से पहले के पूर्ववर्ती किसी पूर्ववर्ष में भारत में निवासी नहीं रही है, तब अधिनियम में अंतर्विष्ट किसी बात के होते हुए भी कुल आय की संगणना, अनामेलित अवक्षयण, के उपचार मुजरे या अग्रनयन और हानियों के मुजरे, संग्रहण और वसूली से संबंधित इस अधिनियम के उपबंध और कर के परिवर्जन से संबंधित विशेष उपबंध, ऐसे अपवादों, उपांतरणों और अनुकूलनों सहित, जो उक्त पूर्ववर्ष के लिए विनिर्दिष्ट किए जाएं, विदेशी कंपनी को लागू होंगे

(i) यदि किसी विदेशी कंपनी का कर के लिए विदेशी अधिकारिता में निर्धारण किया जाता है, और,—

(क) जहां कराधेय आय की संगणना करने के प्रयोजन के लिए उससे अवक्षयण को गणना में लेने की अपेक्षा है, पूर्व वर्ष की पहली तारीख को विदेश में अभिलिखित कर के अनुसार अवक्षणीय आस्ति के

अवलिखित मूल्य (जिसे इसमें इसके पश्चात् अवलिखित मूल्य कहा गया है) को उक्त पूर्व वर्ष के लिए प्रारंभिक अवलिखित मूल्य के रूप में अंगीकृत किया जाएगा,

- (ख) ऐसे मामले, जो (क) में नहीं आते हैं, अवलिखित मूल्य की संगणना ऐसे की जाएगी जैसे कि आस्ति को प्रतिष्ठापित किया गया था, आस्ति का उपयोग किया गया था और अवक्षयण को वास्तव में उस विदेशी अधिकारिता की विधियों के अनुसार अनुज्ञात किया गया था और पूर्व वर्ष की पहली तारीख को इस प्रकार गणना किए गए अवलिखित मूल्य को उक्त पूर्व वर्ष के लिए प्रारंभिक अवलिखित मूल्य के रूप में अंगीकृत किया जाएगा।
- (ii) यदि किसी विदेशी कंपनी का कर के लिए विदेशी अधिकारिता में निर्धारण किया जाता है तब उस विदेशी अधिकारिता की विधियों के अनुसार पूर्व वर्ष की पहली तारीख को लेखा बहियों में वर्णित के अनुसार दर्ज अवक्षणीय आस्ति के अवलिखित मूल्य को उक्त पूर्व वर्ष के लिए प्रारंभिक अवक्षणीय मूल्य के रूप में अंगीकृत किया जाएगा।
- (iii) यदि किसी विदेशी कंपनी का कर के लिए विदेशी अधिकारिता में निर्धारण किया जाता है, तब कर अभिलेख के अनुसार उसकी अग्रणीत हानि और शेष अवक्षयण का अवधारण उक्त पूर्व वर्ष की पहली तारीख को वर्षवार किया जाएगा।
- (iv) यदि किसी विदेशी कंपनी का कर के लिए विदेशी अधिकारिता में निर्धारण नहीं किया जाता है, उस देश की विधियों के अनुसरण में तैयार लेखा बहियों के अनुसार अग्रणीत हानि और शेष अवक्षयण का अवधारण उक्त पूर्व वर्ष की पहली तारीख को वर्ष वार किया जाएगा ;
- (v) यथास्थिति, पैरा (iii) या पैरा (iv) के अनुसार आयी अग्रणीत हानि और शेष अवक्षयण को उक्त पूर्ववर्ष की पहली तारीख को हानि और अग्रणीत शेष अवक्षयण समझा जाएगा और उसे उस वर्ष, जिसमें पहली बार वह हुए थे, को पहला वर्ष मानकर शेष अवधि के लिए अधिनियम के उपबंधों के अनुसार उनका मुजरा करना और अग्रणीत करना अनुज्ञात किया जाएगा :
- परंतु विदेश कंपनी की हानियों और शेष अवक्षयण का विदेश कंपनी की ऐसी आय के विरुद्ध मुजरा करना अनुज्ञात किया जाएगा जो उसके भारतीय निवासी बन जाने के कारण भारत में कर से प्रभार्य हो गई है।
- (vi) ऐसे मामलों में, जिनमें, यथास्थिति, पैरा (iii) या पैरा (iv) में निर्दिष्ट अग्रणीत हानि और शेष अवक्षयण को मूल रूप से भारत में अंगीकृत कर लिया गया है, का कर या विधिक प्राधिकारी की किसी कार्यवाई के कारण विदेशी अधिकारिता में पुनरीक्षण या उपांतरण किया जाता है, हानि और शेष अवक्षयण की रकम को पैरा (iv) में निर्दिष्ट के अनुसार मुजरा और अग्रणीत करने के प्रयोजनों के लिए पुनरीक्षित या उपांतरित किया जाएगा ;
- (vii) ऐसे मामलों में, जिनमें लेखांकन वर्ष 31 मार्च को समाप्त नहीं होता है, विदेशी कंपनी से यह अपेक्षित होगा कि वह उक्त लेखांकन वर्ष के आरंभ होने के तुरंत पश्चातवर्ती लेखांकन वर्ष आरंभ होने की तारीख से प्रारंभ होने वाली और 1 अप्रैल को प्रारंभ होने वाली तथा 31 मार्च को समाप्त होने वाली ऐसी अवधि से, जिसके दौरान विदेशी कंपनी निवासी बन गई है, तुरंत पूर्ववर्ती वर्ष की 31 मार्च तक की अवधि के लिए लाभ और हानि लेखा तथा तुलनपत्र तैयार करे। विदेशी कंपनी से यह भी अपेक्षित होगा कि वह 1 अप्रैल से प्रारंभ होने वाली और 31 मार्च को समाप्त होने वाली बारह मास की उत्तरवर्ती अवधियों के लिए भी उस वर्ष तक, जिस तक विदेशी कंपनी भारत में प्रभावी प्रबंधन के मद्दे निवासी बनी रहती है, के लिए लाभ और हानि लेखा तथा तुलनपत्र तैयार करे ;
- (viii) ऐसे मामलों में, जहां विदेशी कंपनी द्वारा अनुसरण किया जाने वाला लेखांकन वर्ष 31 मार्च को समाप्त नहीं होता है, हानि और शेष अवक्षयण को अग्रणीत करने के प्रयोजन के लिए तथा उस तारीख से, जिसकों

पश्चात्तवर्ती वर्ष 31 मार्च को आरंभ होता है, से प्रारंभ होने वाली अवधि के लिए 1 अप्रैल, को प्रारंभ होने वाली और 31 मार्च को समाप्त होने वाली तुरंत पूर्व अवधि, जिसके दौरान वह निवासी बन जाती है,—

- (क) छह मास से अनधिक को उस लेखांकन वर्ष में सम्मिलित किया जाएगा ;
- (ख) छह मास के समतुल्य या उससे अधिक की अवधि को एक पृथक् लेखांकन वर्ष माना जाएगा ।  
 इस प्रकार विदेश कंपनी द्वारा अनुसरण किया जाने वाला लेखांकन वर्ष कोई कैलेंडर वर्ष है, लेखांकन वर्ष से तुरंत पूर्व लेखांकन वर्ष, जिसमें कंपनी को भारत में निवासी निर्धारित किया जाता है, को तीन मास से बढ़ा दिया जाएगा, अर्थात् 1 जनवरी से 31 मार्च ; और विदेशी कंपनी द्वारा अनुसरण किया जाने वाला लेखांकन वर्ष 1 जुलाई से 30 जून है, उस लेखांकन वर्ष से तुरंत पूर्व का लेखांकन वर्ष, जिसमें कंपनी को भारत में निवासी निर्धारित किया गया है, 1 जुलाई से 31 मार्च तक नौ मास का होगा ।
- (ix) पैरा (viii) में आने वाले मामलों में यथास्थिति, कर अभिलेख या लेखा बहियों के अनुसार विदेशी कंपनी की हानि और शेष अवक्षयण को समनुपात के आधार पर आवंटित किया जाएगा ;
- (x) जहां इस अधिनियम के अध्याय 17ख का एक से अधिक उपबंध विदेशी कंपनी को निवासी के विदेशी कंपनी के रूप में लागू होता है, विदेशी कंपनी को लागू उपबंध ही लागू होगा ;
- (xi) अधिनियम के अध्याय 17ख के उन उपबंधों का अनुपालन, जो विदेशी कंपनी को उसके भारतीय निवासी होने से पूर्व लागू हैं, उक्त अध्याय के उपबंधों का पर्याप्त अनुपालन माना जाएगा ;
- (xii) अधिनियम की धारा 195 की उपधारा (2) में अंतर्विष्ट उपबंध ऐसी रीति में लागू होंगे जिससे विदेशी कंपनी को किए गए संदाय को सम्मिलित किया जा सके ;
- (xiii) विदेशी कंपनी अधिनियम की धारा 90 या धारा 91 के उपबंधों के अनुसरण में संदत्त करें के लिए अनुतोष या कटौती की हकदार होगी ;
- (xiv) ऐसे किसी मामले में, जहां ऐसी आय की, जिस पर विदेशी कर संदत्त किया गया है या उसकी कटौती की गई है, एक से अधिक वर्षों के लिए कर की प्रस्थापना की जाती है, वहां विदेशी कर के प्रत्यय को उसी समनुपात में ऐसी सभी वर्षों के लिए अनुज्ञात किया जाएगा, जिसमें आय की, ऐसी आय के संबंध में, जिससे वह संबंधित है, भारत में कर के लिए प्रस्थापना की जाती है या कर का निर्धारण किया जाता है और ऐसा आय-कर नियम, 1962 के नियम 128 के उपबंधों के अनुसार किया जाएगा ।

स्पष्टीकरण—इस अधिसूचना के प्रयोजनों के लिए,—

- (i) “विदेशी अधिकारिता” पद से विदेशी कंपनी के निगमन का स्थान अभिप्रेत है ;
- (ii) विदेशी मुद्रा में अभिव्यक्त मूल्य की रुपए में विनिमय की दर, जहां लागू हो, आयकर नियम, 1962 की धारा 115 के उपबंधों के अनुसार होगी ।

आ. पैरा अ में निर्दिष्ट पद, उपांतरण और अनुकूलन भारत में प्रभावी प्रबंध स्थान के कारण भारतीय निवासी बनने वाली विदेशी कंपनी की ऐसी आय के संबंध में लागू नहीं होंगे, जो भारत में विदेशी कंपनी के भारतीय निवासी नहीं बनने के पश्चात् भी कर से प्रभार्य होती ।

इ. ऐसे किसी मामले में, जहां विदेशी कंपनी का किसी पूर्व वर्ष में उसके भारत में निवासी होने का कथन किया गया है, वहां ऐसे पूर्व वर्ष के, जिसके दौरान उसके भारत में निवासी होने का कथन किया गया है, तुरंत उत्तरवर्ती वर्ष के

दौरान पैरा अ में निर्दिष्ट अपवाद, उपांतरण और अनुकूलन इस शर्त के अधीन रहते हुए उक्त पूर्व वर्ष को लागू होंगे कि शेष अवक्षयण, अग्रणीत हानि और शेष अवक्षयण, जो पूर्व वर्ष की पहली तारीख को वे होंगे, जो इस अधिसूचना के उपबंधों के अनुसरण में पूर्ववर्ती पूर्व वर्ष की 1 तारीख को गणना किए गए थे।

ई. विदेशी कंपनी के अधिनियम के अधीन किसी अन्य व्यक्ति या निकाय के साथ किसी संव्यवहार में इस आधार पर फेरफार नहीं किया जाएगा कि विदेशी कंपनी भारत में निवासी बन गई है।

उ. पूर्वोक्त के अधीन रहते हुए विदेशी कंपनी को तब भी विदेशी कंपनी माना जाना जारी रहेगा यदि उसका भारत में निवासी होने का कथन किया गया है तथा अधिनियम के सभी उपबंध तदनुसार लागू होंगे। परिणामस्वरूप, निम्नलिखित को विशिष्ट रूप से,—

- (i) किसी विदेशी कंपनी को लागू उपबंधों का उसे लागू होना जारी रहेगा ;
- (iii) अनिवासी व्यक्तियों को लागू उपबंध उसे लागू नहीं होंगे ; और
- (iv) निवासी को विनिर्दिष्ट रूप से लागू उपबंध उसे लागू होंगे।

ऊ. किसी विदेशी कंपनी को निवासी के रूप में लागू उपबंध और उसे विदेशी कंपनी के रूप में लागू उपबंध के बीच किसी द्वंद की दशा में पश्चातवर्ती को लागू उपबंध साधारणतया अविभावी होंगे। विदेशी कंपनी को लागू आय-कर की दर यहां तक कि उसके प्रभावी प्रबंध स्थान के आधार पर विदेशी कंपनी की निवासी प्रास्थिति में अर्थात् अनिवासी से निवासी में, इसलिए, विदेशी कंपनी की दशा में कर की दर वही रहेगी।

2. यह अधिसूचना 1 अप्रैल, 2017 से प्रवृत्त हुई समझी जाएगी।

[अधिसूचना सं. 29./2018/फा.सं. 370142/19/2017-टीपीएल]

नीरज कुमार, अवर सचिव

**स्पष्टीकारक ज्ञापन :** यह प्रमाणित किया जाता है कि इस अधिसूचना को भूतलक्षी प्रभाव देने से कोई व्यक्ति प्रतिकूल रूप से प्रभावित नहीं हो रहा है।

## MINISTRY OF FINANCE

### DEPARTMENT OF REVENUE

#### [CENTRAL BOARD OF DIRECT TAXES]

#### Notification

New Delhi, the 22<sup>nd</sup> June, 2018

#### (INCOME-TAX)

**S.O. 3039 (E).**—In exercise of the powers conferred by sub-section (1) of section 115JH of the Income-tax Act, 1961 (43 of 1961) (hereinafter referred to as the Act), the Central Government hereby notifies that,—

A. in a case where a foreign company is said to be resident in India on account of its Place of Effective Management (hereinafter referred to as PoEM) being in India under sub-section (3) of

section 6 of the Act in any previous year and such foreign company has not been resident in India in any of the previous years preceding the said previous year, then, notwithstanding anything contained in the Act, the provisions of the Act relating to the computation of total income, treatment of unabsorbed depreciation, set off or carry forward and set off of losses, collection and recovery and special provisions relating to avoidance of tax shall apply to the foreign company for the said previous year with exceptions, modifications and adaptations specified here under:

- (i) If the foreign company is assessed to tax in the foreign jurisdiction, and,—
  - (a) where it is required to take into account depreciation for the purpose of computation of its taxable income, the written down value (hereinafter referred to as WDV) of the depreciable asset as per the tax record in the foreign country on the 1<sup>st</sup> day of the previous year shall be adopted as the opening WDV for the said previous year,
  - (b) in cases not covered by (a), the WDV shall be calculated in the manner, as though the asset was installed, utilised and the depreciation was actually allowed as per the provisions of the laws of that foreign jurisdiction and the WDV so arrived at as on the 1<sup>st</sup> day of the previous year, shall be adopted to be the opening WDV for the said previous year.
- (ii) If the foreign company is not assessed to tax in the foreign jurisdiction, then WDV of the depreciable asset as appearing in the books of account as on the 1<sup>st</sup> day of the previous year maintained in accordance with the laws of that foreign jurisdiction shall be adopted as the opening WDV for the said previous year.
- (iii) If the foreign company is assessed to tax in the foreign jurisdiction, its brought forward loss and unabsorbed depreciation as per the tax record shall be determined year wise on the 1<sup>st</sup> day of the said previous year.
- (iv) If the foreign company is not assessed to tax in the foreign jurisdiction, its brought forward loss and unabsorbed depreciation as per the books of account prepared in accordance with the laws of that country shall be determined year wise on the 1<sup>st</sup> day of the said previous year.
- (v) The brought forward loss and unabsorbed depreciation of the foreign company as arrived at paras (iii) or (iv), as the case may be, shall be deemed as loss and unabsorbed depreciation brought forward as on the 1<sup>st</sup> day of the said previous year and shall be allowed to be set off and carried forward in accordance with the provisions of the Act for the remaining period calculated from the year in which they occurred for the first time taking that year as the first year.

Provided that the losses and unabsorbed depreciation of the foreign company shall be allowed to be set off only against such income of the foreign company which have become chargeable to tax in India on account of it becoming Indian resident.

- (vi) In cases where the brought forward loss and unabsorbed depreciation referred to in para (iii) or (iv), as the case may be, originally adopted in India are revised or modified in the foreign jurisdiction due to any action of the tax or legal authority, the amount of the loss and unabsorbed depreciation shall be revised or modified for the purposes of set off and carry forward as referred to in para (v).
  - (vii) In cases where the accounting year does not end on 31<sup>st</sup> March, the foreign company shall be required to prepare profit and loss account and balance sheet for the period starting from the date on which the accounting year immediately following said accounting year begins, upto 31<sup>st</sup> March of the year immediately preceding the period beginning with 1<sup>st</sup> April and ending on 31<sup>st</sup> March during which the foreign company has become resident. The foreign company shall also be required to prepare profit and loss account and balance sheet for succeeding periods of twelve months, beginning from 1<sup>st</sup> April and ending on 31<sup>st</sup> March, till the year the foreign company remains resident in India on account of its PoEM.
  - (viii) For the purpose of carry forward of loss and unabsorbed depreciation in cases where the accounting year followed by the foreign company does not end on 31<sup>st</sup> March and the period starting from the date on which immediately following year begins upto 31<sup>st</sup> March of the year, immediately preceding the period beginning with 1<sup>st</sup> April and ending on 31<sup>st</sup> March during which it has become resident, is,—
    - (a) less than six months, it shall be included in that accounting year;
    - (b) equal to or more than six months, that period shall be treated as a separate accounting year.
- Thus, if the accounting year followed by the foreign company is calendar year, the accounting year immediately preceding the accounting year in which the foreign company is held to be resident in India, shall be increased by three months, i.e., 1<sup>st</sup> January to 31<sup>st</sup> March; and if the accounting year followed by the foreign company is from 1<sup>st</sup> July to 30<sup>th</sup> June, the accounting year immediately preceding the accounting year in which the foreign company is held to be resident in India, shall be of nine months from 1<sup>st</sup> July to 31<sup>st</sup> March.
- (ix) In cases covered under para (viii), loss and unabsorbed depreciation as per tax record or books of account, as the case may be, of the foreign company shall, be allocated on proportionate basis.

- (x) Where more than one provision of Chapter XVII-B of the Act applies to the foreign company as resident as well as foreign company, the provision applicable to the foreign company alone shall apply.
- (xi) Compliance to those provisions of Chapter XVII-B of the Act as are applicable to the foreign company prior to its becoming Indian resident shall be considered sufficient compliance to the provisions of said Chapter.
- (xii) The provisions contained in sub-section (2) of section 195 of the Act shall apply in such manner so as to include payment to the foreign company.
- (xiii) The foreign company shall be entitled to relief or deduction of taxes paid in accordance with the provisions of section 90 or section 91 of the Act.
- (xiv) In a case where income on which foreign tax has been paid or deducted, is offered to tax in more than one year, credit of foreign tax shall be allowed across those years in the same proportion in which the income is offered to tax or assessed to tax in India in respect of the income to which it relates and shall be in accordance with the provisions of rule 128 of the Income-tax Rules, 1962.

*Explanation.*— For the purposes of this notification,—

- (i) the term “Foreign jurisdiction” would mean the place of incorporation of the foreign company.
- (ii) the rate of exchange for conversion into rupees of value expressed in foreign currency, wherever applicable, shall be in accordance with provision of rule 115 of the Income-tax Rules, 1962.

B. the exceptions, modifications and adaptations referred to in para A shall not apply in respect of such income of the foreign company becoming Indian resident on account of its PoEM being in India which would have been chargeable to tax in India, even if the foreign company had not become Indian resident.

C. in a case where the foreign company is said to be resident in India during a previous year, immediately succeeding a previous year during which it is said to be resident in India; the exceptions, modifications and adaptations referred to in para A shall apply to the said previous year subject to the condition that the WDV, the brought forward loss and the unabsorbed depreciation to be adopted on the 1<sup>st</sup> day of the previous year shall be those which have been arrived at on the last day of the preceding previous year in accordance with the provisions of this notification.

D. any transaction of the foreign company with any other person or entity under the Act shall not be altered only on the ground that the foreign company has become Indian resident.

E. subject to the above, the foreign company shall continue to be treated as a foreign company even if it is said to be resident in India and all the provisions of the Act shall apply accordingly. Consequently, the provisions specifically applicable to,—

- (i) a foreign company, shall continue to apply to it;
- (ii) non-resident persons, shall not apply to it; and
- (iii) the provisions specifically applicable to resident, shall apply to it.

F. in case of conflict between the provision applicable to the foreign company as resident and the provision applicable to it as foreign company, the later shall generally prevail. Therefore, the rate of tax in case of foreign company shall remain the same, i.e., rate of income-tax applicable to the foreign company even though residency status of the foreign company changes from non-resident to resident on the basis of PoEM.

2. This notification shall be deemed to have come into force from the 1<sup>st</sup> day of April, 2017.

[Notification No. 29/2018/ F.No. 370142/19/2017-TPL]

NIRAJ KUMAR, Under Secy.

**Explanatory Memorandum:** It is certified that no person is being adversely affected by giving this retrospective effect to this notification.